Indian Journal of Social Sciences and Literature Studies
Vol. 8, Issue 2, April 2022
ISSN 2349-5634 (Print) ISSN 2455-0973 (online)

कवि पून्तानम की भक्ति भावना (ज्ञानप्पाना के विशेष संदर्भ में)

डॉ.मीरा.पी.आई.
असि.प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
सामूतिरी गुरुवायूरप्पन कॉलेज
कालिकट, केरल-

भारत की सारी भाषाओं में भक्तिसाहित्य का आविर्भाव पन्द्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी के आसपास हुआ था। इतिहास इस बात का साक्षी है कि, भक्ति आन्दोलन का बीजवपन दक्षिण भारत में हुआ। भक्ति द्राविड उपजी वाली बात इसकी पुष्टी करती है।

दक्षिण भारत के भक्ति आन्दोलन से जुडे कवियों में पम्प, कुमारव्यास(कन्नड), कम्ब(तमिल), रंगनाथ(तेलुगु) आदि प्रमुख हैं। मलयालम के संदर्भ में कृष्णभक्ति शाखा में चेरुश्शेरी और पून्तानम अग्रणी है तथा रामभक्तिशाखा में एषुत्तच्छन का नाम सर्वप्रमुख आता है। मलयालम का भक्ति साहित्य सगुण और निर्गुण नामक अलग-अलग रूपों में विकसित नहीं हुआ। कृष्णभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि है पून्तानम नम्पूतिरी और उनकी शिखर कृति है, 'ज्ञानप्पाना'। पून्तानम सोलहवीं सदी के कवि थे और उनका जीवनकाल पन्द्रह सौ सैंतालीस से सोलह सौ चालीस तक माना जाता है। नम्पूतिरी परिवार के घराना इल्लम नाम से जाना जाता है। केरल के जिला मलप्पुरम के वल्लुवनाटु तालूका के कीषाट्टूर में पून्तानम घराना आज भी स्थित है। उस घराने के एक औरत को ब्याह करके नम्पूतिरी यहाँ पहुँचे थे।

केरल के मशहूर श्रीकृष्ण मंदिर गुरुवायूर में पून्तानम, कृष्ण की उपासना करते थे। संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान मेलपत्तूर नारायण भट्टतिरिप्पाडु इनके समकालीन थे। 'नारायणीयम', जो संस्कृत में है मेलपत्तूर की प्रकृष्ट कृति है। पून्तानम उनसे बहुत प्रभावित हो गये थे। कृष्णचरित पर केन्द्रित एक मलयालम काव्य लिखकर सुधार निखार के लिए पून्तानम ने मेलपत्तूर को दिया। चूँकी ये कृति मलयालम में थी, इसलिए मेलपत्तूर ने इसपर कोई रुचि नहीं दिखाई। इसके कुछ दिन बाद मेलपत्तूर वात रोग से पीडित हुए और एक रात उनके स्वप्न में आकर श्रीकृष्ण ने कहा कि, "तुम्हारी विभक्ति कि तुलना में मुझे पून्तानम की भक्ति अधिक प्रिय है।" इस स्वप्न दर्शन के तुरन्त बाद मेलपत्तूर ने गुरुवायूर आकर पून्तानम से क्षमा याचना की, और उनकी कृति के लिए आवश्यक सुझाव भी दिए। यही कृति 'ज्ञानप्पाना' है। गेय रचनाओं की एक विशेष शैली को पाना कहते हैं।

पून्तानम के पारिवारिक जीवन में घटी एक दारुण कहानी के बारे में एक जनश्रुति है। विवाह के बाद बहुत वर्ष बीतने के बाद भी नम्पूतिरी को सन्तान प्राप्ति नहीं हुई। गुरुवायूरप्पन का नित्य भजन करने पर आखिर उन्हें पुत्रलाभ हुआ। बेटे के अन्नप्राशन के लिए घर में आये अतिथि गण अंगोझा उतारकर अलगनी में डाल रखे थे। दुर्भाग्यवश अलगनी टूट गयी और नीचे सोये पडे बच्चे के ऊपर कपडे गिर पडे। साँस न ले पाने के कारण बच्चे की मृत्यू हो जाती है।

पुत्रशोक धीरे-धीरे एक दार्शनिक भाव के रूप में विकसित हो गया। यह दार्शनिकता कवि को सांत्वना देती रही। ज्ञानप्पाना इसी दार्शनिकता की उपज है।

"उण्णिकृष्णन मनस्सिल कळिक्कुम्पोळ
उण्णिकळ् मट्टु वेणमो मक्कळाय्।"

बालकृष्ण मन में विराजता है तो और सन्तान की क्या ज़रूरत! उनके मानसपटल पर बालकृष्ण का रूप इस तरह स्थायी रूप से अंकित हो गया और उनकी रचना ईश्वरोन्मुख हो गयी।

गुरुवन्दना से यह काव्य शुरू होता है। कवि जीवन को सार्थक बनाने के उपायों के बारे में बताते हैं। कवि चाहते हैं कि ईश्वर का नाम हमेशा जिह्वा पर रहे।

"तिरुनामङ्ङळ नाविन्मेलेप्पोषुम
पिरियातेयिरिक्कनणम् नम्मुडे
नरजन्मम सफलमाक्कीडुवान"

नश्वर सांसारिक जीवन के बारे में कवि के विचार इस प्रकार है।

"इन्नलेयोळम एन्तेन्नरिञ्ञीला
इनि नालेयुमेन्तेन्तेन्नरिञ्ञीला
इन्निक्कन्डा तडिक्कु विनाशवु
मिन्ननेरमेन्नतुमरिञ्ञीला"

बीते हुए कल और आनेवाले कल मनुष्य के हाथों में नहीं है।

"रण्डु नालु दिनं कोण्डोरुत्तने
तण्डिलेटि नडत्तुन्नतुम भवान
मलिका मुकलेरिया मन्नन्डे
तोलिल माराप्पु केट्टुन्नतुम भवान"

हमें इस बात की हमेशा याद रखनी चाहिए कि राजा के रंक और रंक के राजा बनने में देर नहीं लगती। मनुष्य अपने जीवन में सत्कर्म करते रहेंगे तो उसको सद्गति मिलेंगी। पुनर्जन्म को लेकर कवि अपना विचार यूँ प्रकट करते हैं- दुष्कर्मी अगले जन्म में चण्डाल के रूप में जन्म लेगा। नृशंस राजा मरकर कीडे मकौडे का जन्म लेगा। इस ढंग से पुनर्जन्म के बारे में कई संकेत ज्ञानप्पाना में मिलते हैं।

ज्ञानप्पाना इस प्रकार के कई उपदेशों का अमृतकुंभ है। इस रचना की विशेषता यह भी है कि अनपढ लोग भी उनके आन्तरिक सन्देश को आत्मसात कर सकते हैं। क्योंकि उनकी भाषा बहुत सरल और सुबोध है। ज्ञानप्पाना अंतश्चेतना के विकास का मार्ग सुगम बनानेवाली कालजयी कृति है, और काव्य, दर्शन और संस्कृति की त्रिवेणी कहलाती है।

पून्तानम की स्मृति को चिरस्थायी रखने के लिए केरल सरकार ने जिला मलप्पुरम के पेरिन्तलमण्णा में एक संस्था बनायी है। हर साल इधर साहित्योत्सव का आयोजन होता है, जहाँ भारत के कोने-कोने से साहित्यकार और संस्कृतिकर्मी आते हैं।